१८५७ के विप्लव की अमर दीप शिखा

रानी लक्ष्मीबाई

एवं

सम्बन्धित लेख

डा० भगवानदास गुप्त

डा० सुधा गुप्त

बुन्देलखंड प्रकाशन, झाँसी

Scanned with OKEN Scanner

१८५७ के विप्लव की अमर दीप शिखा

रानी लक्ष्मीबाई

एवं

सम्बन्धित लेख

लेखक :

डा० भगवानदास गुप्त

एल-एल. बी; पी-एच. डी; डी. लिट.

डा० सुधा गुप्त

पी-एच. डी.

बुन्देलखण्ड प्रकाशन, झाँसी

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक के सर्वाधिकार लेखकों के पास सुरक्षित
प्रथम संस्करण : जून १९८९

प्रकाशक :

बुन्देलखण्ड प्रकाशन

११३ खत्रयाना मार्ग,

झाँसी (उ.प्र.)–२८४००२।

मूल्य ५०/- रुपये

मुद्रक :

मानस-मुद्रण,

१८४ तलैया, झांसी।

Scanned with OKEN Scanner

लेख–सूची

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१.	रानी लक्ष्मीबाई (डा० भगवानदास गुप्त)	१—२७
२.	झाँसी का विजन (डा० सुधा गुप्त)	२८—४३
३.	लक्ष्मीबाई की विवशता बनाम अवसरवादिता (डा० भगवानदास गुप्त)	४४—५५
४.	रानी के काल में हिन्दू-मुस्लिम सौहाद्र (डा० भगवानदास गुप्त)	५६—५८
५.	रानी के समकालीन झाँसी के दो कवि पजनेस और हृदेश (डा० सुधा गुप्त)	५९–८२
६.	कुड़रा कृत "झाँसी को राइसो" (डा० सुधा गुप्त)	८३...९०
७.	बुन्देलखण्ड में विप्लव, एक सर्वेक्षण (डा० भगवानदास गुप्त)	९१—९८

Scanned with OKEN Scanner

लेखक-परिचय

डा० भगवानदास गुप्त, एल-एल. बी., पी-एच. डी., डी. लिट, अखिल भारतीय इतिहास कांग्रेस के मध्ययुगीन भारतीय इतिहास के अध्यक्ष, राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली के अनुदान समिति के सदस्य, उत्तर प्रदेश अभिलेखागार लखनऊ के परामर्शदाता, भारतीय इतिहास संशोधक मण्डल पूना, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ (म प्र०) जीवाजी शोध संस्थान ग्वालियर आदि से सम्ब न्ध रहे हैं। वे भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद दिल्ल के वरिष्ठ फैलो भी है। बुन्देलखण्ड के इतिहास पर उनके चार ग्रन्थ और अनेकों शोध पत्र प्रकाशित हो चुके।

डा० सुधा गुप्त, पी-एच. डी., रीतिकालीन और आधुनिक हिन्दी साहित्य की अध्येता, लेखिका और समालोचिका। सम्प्रति बुन्देलखण्ड की रीतिकालीन कृतियों पर कार्य कर रही हैं। मोहनदास मिश्र की कृष्णचन्द्रिका और सुन्दर कविराय के सुन्दर शृंगार के हस्तलिखित ग्रन्थों को खोज कर उनका सम्पादन कर चुकी हैं। अन्य कृतियों की खोज जारी है। बुन्देली लोकवार्ता और लोक संस्कृति शोध की नई दिशा है।

Scanned with OKEN Scanner